प्रकाशनार्थ।

19 सितंबर, 2024

गोरखनाथ मंदिर कथा।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 55 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 10 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के छठवें दिन श्री राममंदिर गुरुधाम वाराणसी से पधारे श्रीमद्जगतगुरु अनंतानंद द्वाराचार्य काशीपीठाधीश्वर स्वामी डॉ राम कमल दास वेदांती जी महाराज ने व्यास पीठ से कहा कि संसार में यदि कोई रस है तो वह परमात्म-तत्त्व का ही रस है, वह तत्त्व भगवान् श्रीकृष्ण के रूप में आकर गोपियों को महारास में अपने रस का अनुभव कराते है। रसों के समूह को रास कहते हैं और उसकी उच्चतम अवस्था हीं महारास है। हमारे दशों इन्द्रियों के अपने-अपने विषयों में जो आनन्द की प्राप्ति होती है, वही रस है। वो सभी रस जब एक साथ जहाँ प्राप्त होते हैं वो महारास भगवान् गोपियों के साथ करके उनको परमानन्द की प्राप्ति कराते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण योगियों के ईश्वर के भी ईश्वर हैं, इसलिए उनको योगेश्वरेश्वर कहते हैं। उन्हें भगवान कहते है, क्योकि भग कहने से उन छः सम्पत्तियों को बताया जाता है, जिसमे ऐश्वर्य की पूर्णता हो, धर्म, यश, श्री अर्थात् लक्ष्मी, ज्ञान तथा वैराग्य इन सब की पूर्णता हो, वही भगवान् कहा जाता है।

महारास में भगवान् जब बाँसुरी बजाते हैं तो उसमे सभी गोपियों को अपना-अपना नाम सुनाई देता है। जो जिस स्थिति में थी, उसी स्थिति में भगवान् की तरफ दौड़ पड़ती हैं। जिनके पति उनको कमरे में बन्द कर देते हैं वे अपना स्थूल शरीर वहीं छोड़ कर सूक्ष्म शरीर से महारास करने पहुंच जाती है। महारास में भगवान् प्रत्येक गोपियों के साथ रमण करते हैं। भगवान का रंग गोपियों पर और गोपियों का रंग भगवान पर चढ़ जाता है। भगवान गोपियों के अभिमान को नष्ट करके उनको पूर्णानन्द की प्राप्ति कराते हैं।

परमात्मा के वियोग में तडपते हुए लोगो को उनकी प्राप्ति के लिए नाम, रूप, लीला और धाम ये साधन चतुष्टय बताये गये हैं। गोपियों ने भगवान के अलग-अलग लीलाओं को स्वयं करते हुए उनको याद किया ,और भगवान् श्रीकिशोरी जी के साथ जाकर उनका पुष्पों से श्रृंगार करते है ।

कथा व्यास ने कहा कि रास पञ्चाध्यायी की कथा सुनने से हृदय के विकार रूपी रोग नष्ट हो जाते हैं, जिसके बाद स्वस्थ हृदय में भगवान् का वास हो जाता है। यह रास पञ्चाध्यायी श्रीमद्भागवत का प्राण है, क्योंकि इसमें श्रीकृष्ण की भक्ति की चरम अवस्था गोपियों को प्राप्त होती है।

संसार में प्रेम की पूजा होती है संसार के सम्बन्धों की नही। भगवान के साथ जो प्रेम राधा का है वह किसी अन्य गोपियों या उनकी रानियों का नहीं है। इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा राधा जी के साथ हीं की जाती है अन्य के साथ नहीं। राधा का प्रेम निष्काम प्रेम है जो उनको अन्य से अलग करता है, यहीं निष्काम प्रेम की सुन्दरता है।

कथा व्यास ने कहा कि अपने माता, पिता, वृद्ध, भार्या, शिशु और विद्वान् लोगों का सम्मान करना चाहिए। भगवान् श्री कृष्ण कंस का वध करने के बाद माता देवकी व पिता वसुदेव को जेल के अन्दर जाकर चरण वन्दना करते हैं और उनसे विलम्ब से आकर जेल
से छुड़ाने के लिए क्षमा याचना करते हैं।

उन्होने कहा कि अपने बच्चों को सन्मार्ग पर ले जाना है तो समय समय पर अपने घर में सन्तों को बुलाना चाहिए। सन्तों के द्वारा दिए गए उपदेश की एक लाइन भी बच्चे के जीवन को सही दिशा दे सकती है।

कथाव्यास ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए महारास की कथा, कंस वध, देवकी वसुदेव मिलन, उद्धव गोपी संवाद, रुक्मिणी विवाह सहित अनेक प्रसंगों को सुनाया। कथा के समापन में
गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, कालीबाड़ी के महंत रविन्द्रदास, योगी धर्मेन्द्र नाथ, चेचाइ राम के महंत पञ्चानन पुरी, अवधेश सिंह, पुष्पदंत जैन, महेश पोद्दार आदि ने आरती किया । सांसद रवि किशन शुक्ल भी कथा में उपस्थित रहे।

संचालन डॉ॰ भगवान् सिंह ने किया।

कथा में बड़ी संख्या में सन्त गण व श्रद्धालु जन उपस्थित रहे।